

140
28 (A-E)

980
26

अथ
सङ्कीर्णपत्रसङ्ग्रहः

San Kiirna patra Sangraha

३८ गंगा सहस्रनाम
 ४० गोपाव सहस्रनाम
 ४१ प्रादियहनाम
 ४२ सिद्धवर्म
 ४३ नारायणवर्म
 ४४ गरुडशकवच
 ४५ देवीकवच
 ४६ सुर्यकवच
 ४७ रामरक्षा
 ४८ सिद्धरक्षा
 ४९ सिद्धकवच
 ५० प्रसादाख्यसिद्धकवच
 ५१ हनुमतकवच
 ५२ पंचमुखीहनुमतकवच
 ५३ महीम
 ५४ सोपानपंचक
 ५५ सिद्धप्रपराधसदनसोत्र
 ५६ सिद्धमानसपुष्पा
 ५७ सिद्धविष्णुपरासोत्र
 ५८ माकंडेयकृतसिद्धसोत्र

१७ भावप्रकाशवैद्यक
 का १८००
 १८ सारगधरवैद्य
 १९ वैद्यदर्पणवैद्यक
 २० माधोनिदानवै
 २१ चिकित्सादीपवैद्य
 २२ चिकित्साजल
 २३ वैद्यसंग्रहभासा
 २४ रामचंद्रिकाभाषा
 २५ सुकवहर्तरीभाषा
 २६ प्रजरकोसभाषा
 २७ प्रसतीमुखा
 २८ तत्त्वबोधनीको
 मुदीकाटीका
 २९ भाष्यप्रकाश
 ३० गायनप्रकार

५८ मा केंडिय कृत सिव सौत्र
 ५८ सिव सौती
 ६० सि धांत विद सिव सौत्र
 ६१ वसी षकृत सिव सौत्र
 ६२ नारद कृत गरुड सौत्र
 ६३ व्यास कृत नव ग्रह सौत्र
 ६४ गरुड सौत्र
 ६५ कुट्टिष गरुड सौत्र
 ६६ गरुड सौत्र निषद
 ६७ खडं गरुड प्रथा व्याय
 ६८ संहिता प्रध्याय ४०
 ६९ गं गाथ क २
 ७० वागदेवी सौत्र
 ७१ सनी सौत्र
 ७२ सप्रसो की गीता
 ७३ चतु सौ की भागवत
 ७४ दे की मान सपुजा
 ७५ वेद क कवच
 ७६ पनंता के कथा
 ७७ हरता वीका के कथा
 ७८ सप्त नारायण के कथा

140

28(A)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ यादपुस्तकनैके ॥
 १ विंशपुराणपुकीर्तिरार्थसटीक १९००
 २ श्रीमद्भागवतद्वादसस्कंदसटीक १८००
 ३ वाराहपुराणमुल
 ४ विंशपुराणपुकीर्तिरार्थमुल १९००
 ५ ब्रह्मोत्तरखंडमुलस्कंदपुराणंतरगत^{२७२}
 ६ केदारखंडमुलस्कंदपुराणंतरगत^{उत्तरक २}
 ७ सेतुमाहात्ममुलस्कंदपुराणंतरगत
 ८ आवराणमाहात्ममुलपुस्तक २
 ९ काटीकमाहात्ममुलपुस्तक २
 १० माद्यमाहात्ममुल
 ११ वैसाखमाहात्ममुलपुस्तक २
 १२ चातुर्मास्यमाहात्ममुल
 १३ चोदबोतममाहात्ममुल
 १४ एकादसीमाहात्ममुल, प्रध्याय २६
 १५ सप्तसतीसटीकप्रध्याय १८
 १६ रामास्वमेधमुल
 १७ जौमिति कृतास्वमेधमुल
 १८ गणेशगीतामुल
 १९ देवीगीतामुल

१८ ॐ देवी गीता मुल

२० न गवत गीता मुल

२१ श्री सिव गीता मुल

१२ गरोस सहस्र नाम

२३ देवी सहस्र नाम

२४ विष्णु सहस्र नाम

२५ श्री सिव सहस्र नाम

२६ ललिता सहस्र नाम

२७ राम सहस्र नाम

२८ लक्ष्मी न सीह सहस्र नाम

२९ गरोस सहस्र नामावली

३० देवी सहस्र नामावली

३१ विष्णु सहस्र नामावली

३२ सूर्य सहस्र नामावली

३३ श्री सिव सहस्र नामावली

३४ गरोस प्र चोतर सत नाम

३५ देवी प्र चोतर सत नाम

३६ विष्णु प्र चोतर सत नाम

३७ सूर्य प्र चोतर सत नाम

३८ श्री सिव प्र चोतर सत नाम

140
28(c)

॥ द्विमुखं तं नितिस्रपयेत्संस्कृतेन ले ॥ घृतेन सिलं सिकथं कृत्वा तत्सहितं क
टे ॥ २८ ॥ विधाय विद्यामष्टध्वंशं तं जपस्वरुते ततः ॥ एवं होमं महालक्ष्मीमावहो
त्पतियन्तः ॥ २९ ॥ शुक्रवारे वारेष्वपि तथा वर्षानप

140

28(03)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ षोडश नित्या सुयाच ष्टी समुद्धारिता ॥ सा विद्या वक्रिका ॥
॥ शिष्याः कथिता भूतः वाक्षरी ॥ १ तदंग निलिपि न्यासं ध्यानं शक्ति प्रवर्धनं ॥ तत्सा ॥
धन विहित रूपाः प्रयोगा निविधानि ॥ २ ॥ होम प्रयं न विदे श्व कथया मिश्र कुम्भ
॥ प्रिये ॥ विद्या द्वितीय वीजेन स्वरान् दीर्घानि योजयेत् ॥ ३ ॥ प्राया

140

28(2)

26

धनकी धृत औ क पुर सो ही पकवारि हेम
 फजरो टालो कुज लको पारो गी सी
 तन सुगंध ता ^{मे} अ धि आने क डारि ॥
 सी सादो दुग तो ही को सवारो गी ॥ वाज
 प्रताप ते ये हो धारी ब्रह्म जैसी मन मे रे
 चे ते सी ही तुरत विचारो गी पुजि हो वी से स
 मा नौ सरदा श्री री सो अविदहिनी धि पाय
 य वाई तो ही सो नेहोरो गी ॥ १० ॥

90	91	92	93	94	95	96	97	98	99
00	01	02	03	04	05	06	07	08	09
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
30	31	32	33	34	35	36	37	38	39
40	41	42	43	44	45	46	47	48	49
50	51	52	53	54	55	56	57	58	59
60	61	62	63	64	65	66	67	68	69
70	71	72	73	74	75	76	77	78	79
80	81	82	83	84	85	86	87	88	89
90	91	92	93	94	95	96	97	98	99

श्रीगुरुगणेशाय नमः ॥ राजैरसै प्रेसये ॥
 सेवरखासमेचठिचैववात्रैचैरी ॥
 चितचौधाकोचावायेरी ॥ इतिवृत्त
 हरेहिमेपरतीफुहरे ॥ ~~सै~~ ककुछोरै
 ककुछोरै जलघरजलधारैश
 भनतकविंदकुं जमवनपवनसो
 पेकाकुकपाहितनहृतपरपांरैरी ॥ का
 मके तुकासोपूलडोलिडोलिरैअरै
 मनखेरैकेयअरैयेकदेवनकीउरैरी
 ॥ १ ॥ ॥ ० ॥ ॥ ० ॥ ॥ फलेगलात्ता ॥ गला
 बकलियानलागेतामेप्रदनकुरतअति
 सरसाईहैहै ॥ पवनकेचलेतेहुमपातक
 रितजातअलीमानोपधुपुहैमेमिअसु
 धिपाईहै ॥ तातेदयालदासअबहुहुनआ
 येस्वामिभक्तविजाकेरंगरूपअतिनीकी
 बनिआईहै ॥ उधोजीनिपटअदेसोसदेसोक
 हियोकुरकंधजीसोवसंतभूरितुआईहै ॥ ३ ॥
 जहाअंबुजासनभक्तसनधृतसनगनेससेसअस
 नसिषासनतरेरहै ॥ तापरअनेदरूपसेजब्रह्म
 रणिजीकीचैतसेबबितानछाहसीरपेकरेहै ॥
 श्रीपतिभक्तजकेचरनसनताकेवावारहोविधाकरेव
 रेहै ॥ मंदरसेवलेरधनाधीसध्वारपैकलेदरवेदर
 सेवहैरपुरंदरपरेरहै ॥ ४ ॥

॥ १ ॥
 ॥ ० ॥
 ॥ ० ॥
 ॥ ० ॥

पच्चेपीटपी ^{अव} अयेव वत नकी
सउयेतसकीतो मत के धत कह
थ नरे तो है गरजी भु पनेजी अकी
वरजी नरहे परजी व दये तो ४५
हृ हृ हृ हृ नरहर तरु दी जे व इ व रोस
ते जे पु मु के धनुष को ह मया रकी उ
जस रोस ह म पर की जत रो सु फल ग
तिज नी ना ज इ हो नरहर उ र हं भी र
मे हं मन मि ह इ हो नरहर के रहे
मो ह म द स व के छु हं हो यति मु
व जे ज जति मु के स ह हं ५५ हं
तकी पंगुति कुंज क टी अ ध र
ध र पुं व व सो व न की च पट
च भ के ध न वि ज ज हं धं वि मो
ति म म ट अ मो व न की धुं धुं
अ सी ह ह ह ह ह के मुख वि
र कुंज ल टा टा अ म क पो ल
नी कि नी ध व र पु सा क रे तु ल
सी व ट नी ज उ टा टा ई न वा
ल न की ॥१॥ टं क प ह